ओमशान्ति मीडिया

दादी प्रकाशमणि जी के स्मृति दिवस पर विशेषांक....

वर्ष -22 अंक - 10 अगस्त -II-2020 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

धरा की अलौकिक आभा दादी प्रकाशमणि

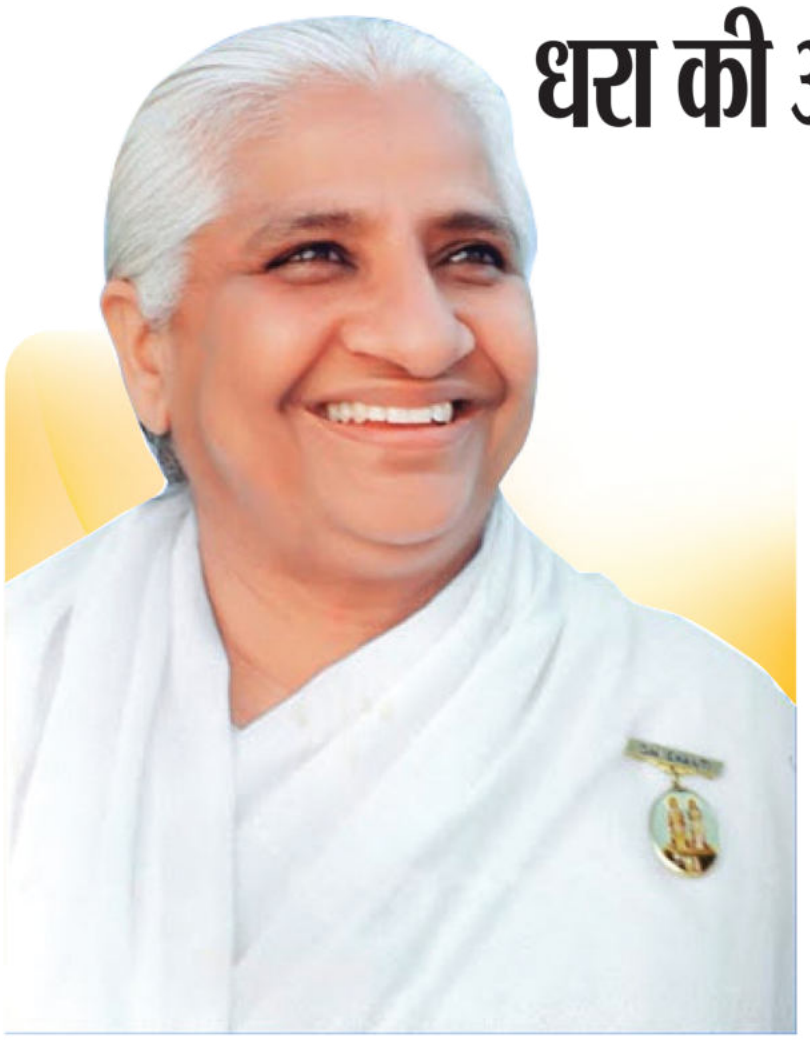

कुशल प्रशासक, सफल प्रकाशक दिव्य आभा से आलौकित और इस धरा पर सभी के लिए यादगार छोड़ने वाली, संत महात्मा से लेकर आम जन-मानस के दिल पर राज करने वाली, अपने एक छोटे से शब्द से सबको निशब्द कर देने वाली, करूणा, प्रेम, दया की स्नेह युक्त प्रतिमूर्ति, पाँचों भूखंडों में परमात्मा के प्रकाश द्वारा सभी को एक सरल जीवन का मार्ग दिखाने वाली गंभीर और रमणीक उदार दादी प्रकाशमणि का ये स्मृति दिवस हम सबको उन्हीं यादों में पुनः ले जाने के लिए आया है। शायद, हम सब भी इन सभी बातों से प्रेरणा लेकर वैसा ही बन जायें तो हम अपनी अति स्नेही दादी को सच्ची श्रद्धासुमन अर्पित कर पायेंगे।

वसुन्धरा को देखते हैं तो समयांतर पर कोई न कोई महान पुरुषों का आगमन होता आया है। जब भी संसार में कोई असमय स्थिति बनी तो उससे निजात दिलाने के लिए महान विभूतियों का जन्म इस संसार में हुआ। उदाहरणार्थ - जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, गौतम बुद्ध, महावीर, क्राइस्ट, मोहम्मद पैगम्बर आदि-आदि। इस खेल में महापुरुषों का बलिदान अतुलनीय रहा है। इस सृष्टि का खेल ही बहुत सुन्दर बना हुआ है। समय की गति की तीव्रता हाहाकार, अत्याचार, पापाचार तक ले जाती है। इन बुराईयों का उन्मूलन पूरी तरह से नहीं हुआ। मानव और ही विलासिता के भंवर में फंसता चला गया। जो सृष्टि स्वर्ग समान थी वहाँ आज तमोप्रधानता का साम्राज्य हो गया। जब इतना अनाचार बढ़ जाता है तब इस धरा पर दिव्य और अलौकिक आभा युक्त पुरुष(आत्मा) की ज़रूरत होती है। ऐसी ही एक दिव्य अलौकिक आभा से युक्त आत्मा जिन्हें हम प्यार से दादी प्रकाशमणि कहते हैं, अगर कहें कि एक अवतार लिया तो कोई अतिश्योक्ति नहीं है। इस धरा पर ये एक ऐसी आत्मा थीं जिन्होंने परमात्मा के साथ जुड़कर, उनकी मर्यादा में चलकर, उनके राग में राग मिलाकर, वैसा ही साज बजाकर अपना और अपनेपन के भाव से सबको मिलाकर चलने वाली और एक स्वर्गिक सुख का आलम पैदा कर देने वाली एक दिव्य विभूति के रूप में अनुभव किया।

दादी को नज़दीक से हमने प्रशासन के साथ-साथ प्रकाशक के रूप में भी देखा। जिस प्रकार से किसी लेख में कौन-सी कड़ी पहले होनी चाहिए और कौन-सी कड़ी बाद में होनी चाहिए, शुरूआत और मध्य कैसा होना चाहिए उसके आधार से लेख की सुन्दरता बनती है। ऐसे ही दादी ने मिलके लोगों के भाव को सबसे आगे रखा, अपनी बुद्धि को बीच में रखा और अपनेपन को अंत में रखा। और इन तीनों के सामंजस्य से एक बहुत सुन्दर बगिया तैयार की। उस बगिया के सभी पुष्प आज भी अपनी खुशबू दादी जी के मापदंडों पर चलकर बिखेर रहे हैं। जो एक सार्थक और सरल जीवन व्यतीत करते हुए आज भी क्रियात्मक रूप से सक्रिय कार्य कर रहे हैं।

उनके बारे में बहुत सारी बातें हैं। लेकिन उनकी कुछ मर्मस्पर्शी यादें आज भी हमारी आंखों को नम कर देती हैं। उनके दर्शन मात्र से ही सब हल्के हो जाते थे। अपनी थकान भूल जाते थे। हर समस्या का समाधान मिल जाता था। लौकिक में जिन्हें माता-पिता का प्यार नहीं मिला था वो लोग भी यहाँ आकर, दादी से मिलकर प्यार महसूस करते थे।

दादी के दिल में हमेशा ये रहता था कि संसार की सर्व आत्मायें सुख-शांति का वर्सा परमात्मा से ले लेवें और दुःख से मुक्त हो जायें। और उन सर्व आत्माओं को सही पहचान परमात्मा की मिल जाये। उस लक्ष्य को सामने रखते हुए दादी जी रूचिपूर्वक सुबह से रात्रि तक कार्यक्रमों का आयोजन करती रहीं।

उनका एक संदर्भ हम सुनाते हैं - दुनिया के बुद्धिजीवी प्रशासक का उनसे मिलना हुआ। उन्होंने दादी जी से पूछा कि आप इतने बड़े संगठन की हेड हैं तो आपको कभी टेंशन नहीं होता? दादी जी ने बड़े ही सहज भाव से उत्तर दिया कि मैं अपने आपको हेड ही नहीं समझती तो हैडेक कैसी? हेड तो परमपिता परमात्मा है। मैं तो सिर्फ निमित्त मात्र हूँ, जो मुझे ऐसे परमात्मा द्वारा रचित विशाल संगठन को सम्भालने का परम सौभाग्य मिला।

दादी जी के प्रेमपूर्ण प्रशासन से हर कोई बहुत प्रभावित होता था। दादी स्वयं में एक प्रेम की मूर्ति थीं। दादी जी के स्नेह के आंचल में हज़ारों ब्रह्मावत्सों ने अपनी ऊंच तकदीर बनाई। दादी जी का निःस्वार्थ, निश्छल, रूहानियत भरे दिव्यस्मित हर कोई के दिल को छू जाता था। जिसे वे ज़िन्दगी भर उसे भुला नहीं पाये।

दादी जी के जीवन सफर में कई ऐसे पड़ाव आये जिनमें चुनौतियां भी थीं और चुनौतियां होने के बावजूद भी लक्ष्य को प्राप्त करने की तमन्ना में कोई कमी नहीं आई। फिर वे बिना रूके, बिना थके परमात्म पथ प्रदर्शक, परमात्मा द्वारा बताये गए पद् चिन्हों पर चल सबको परमात्मा का पैगाम दिया। परमात्मा का प्यार कैसा होगा, ये अगर समझना हो या उसे पाना हो या इस गुत्थी को सुलझाना हो तो उसका जीता-जागता हल दादी जी का जीवन रहा। मानो कि दादी जी का जीवन ही प्रभु-प्रदत्त प्रेम व शक्तियों से सराबोर था। ऐसे प्रकाशमणि सर्व के जीवन को प्रकाशमय बनाने वाली, सबके चेहरों पर खुशियां बिखेरने वाली, सबके जीवन को हल्का व उसमें उमंग भरने वाली साक्षात उमा देवी के 14वें स्मृति दिवस पर शत-शत श्रद्धासुमन।

तत्कालीन गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी जी से मिलते हुए दादी प्रकाशमणि जी।

तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी से मिलते हुए दादी प्रकाशमणि जी।

तत्कालीन प्रसिद्ध समाज सेविका मदर टेरेसा जी से ज्ञान चर्चा करते हुए दादी प्रकाशमणि जी।